SISE & CTE, JABALPUR

ONLINE CLASS SESSION

- Date : 01/05/2020
- Coordinator : Shri Pradeep Kumar Behre
- Class : M.Ed. 2nd Sem
- Time : 02 to 02:40 PM
- Subject : Science Education
- Topic : प्रतिभावान विद्यार्थियों की पहचान व विशेषताएं, शिक्षण नीति, समृद्धशाली कार्यक्रम,उनकी शिक्षण विधियां |
- TLM Used : Power Point Presentation
- Attendance : 22 Participant

प्रतिभाशाली बालकों के लिये शिक्षक की भूमिका / प्रतिभाशाली बालकों के लिये उपचारात्मक शिक्षण

- पृथक कक्षाओं की व्यवस्था करना
- व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना
- चुनौतीपूर्ण एवं रुचिपूर्ण प्रश्नों का समावेश करना
- कमजोर बालकों के मार्गदर्शन हेतु प्रतिभाशाली बालकों की सहायता लेना
- प्रतिभावान छात्रों के लिये अन्तःशाला/अन्तःकक्षा प्रतियोगिताओं का आयोजन करना
- शिक्षण, समूह परिचर्चा के माध्यम से
- मौलिक अनुसंधान/नवाचार करने हेतु प्रेरणा/प्रोत्साहन
- गृहकार्य विविधतापूर्ण एवं चुनौती देने वाला देना चाहिये
- विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में समन्वय स्थापित कर Integrated Approach से शिक्षण
- व्यवस्थित सामग्री (Programmed Material) के माध्यम से शिक्षण
- एक ही समस्या को विभिन्न तरीकों से हल करने को प्रोत्साहन देना
- विज्ञान सम्बंधी नवीन आविष्कारों को जानने, सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराना चाहिये
- स्थूल या प्रत्यक्ष वस्तुओं के स्थान पर सूक्ष्म (Abstract) प्रत्यय का उपयोग करना चाहिये।
- मूल्यांकन हेतु विशेष परीक्षाओं (Tests) का आयोजन
- Product एवं Process का स्वमूल्यांकन
- बौद्धिक उत्सुकता बने रहने हेतु विषयसामग्री का प्रभावी प्रस्तुतीकरण
- बालकों के संवेगात्मक संतुलन रखने हेतु अभिभावकों का सहयोग

प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा / शैक्षिक व्यवस्थाएँ / विद्यालय की भूमिका / प्रतिभावान बालकों के लिये शैक्षिक कार्यक्रम हेतु प्रयत्न

- गतिवर्द्धन / गतिवृद्धि (Acceleration) - बालक का एक अनुदेशन स्तर से दूसरे अनुदेशन स्तर की ओर सामान्य बालकों की अपेक्षाकृत कम समय में जाना अर्थात जब एक बालक एक वर्ष में एक कक्षा उत्तीर्ण करता है, तो प्रतिभावान बालक दो या तीन कक्षाएँ उत्तीर्ण कर लेता है, परंतु यह केवल तभी सम्भव है जब बालक प्रथम स्तर पर पूर्णतः कुशलता प्राप्त कर ले। गतिवर्द्धन तभी सम्भव है जब कक्षा के दिये जाने वाले अनुदेशन प्रतिभावान बालक के अनुरूप हो।
  इस विधि में कुछ कमियाँ भी हैं। जो बालक अपनी प्रखर बुद्धि से एक ही वर्ष में दो या तीन स्तर पार कर लेता है, वह एक ऐसे आयुवर्ग के समानान्तर हो जाता है जो उससे आयु में कहीं अधिक है।
- पृथक्करण - विद्यार्थियों को योग्यतानुसार विभिन्न समूहों में रखना तथा समूहों को पूर्णरूप से विकास की छूट देना। पुनः यह घमण्ड एवं कुसमायोजन उत्पन्न कर सकती है साथ ही पृथक कक्षा या विद्यालय बनाना खर्चीला है।
- सम्पन्नीकरण (Enrichment) / समृद्धि कार्यक्रम - कम खर्चीली होने के कारण, वर्तमान में अधिक प्रचलित
  - प्रतिभावान बालक, सामान्य बालक के पाठ्यक्रम को अधिक विस्तृत एवं गूढ़ (Extensive & Intensive) रूप से अध्ययन करता है।
  - इसमें गूढ़ अध्ययन पर बल दिया जाता है।
  - इसके लिये अलग पाठ्यक्रम तैयार करना पड़ता है, शिक्षकों के ऊपर बहुत बड़ा बोझ हो जाता है जब उन्हें एक साथ दो प्रतिभावान बालकों के लिये ऐसे कार्यक्रम बनाने होते हैं। इस कठिनाई को कम करने के इरादे से कुछ शिक्षक, कक्षा

Contd-

Contd- के विद्यार्थियों को योग्यतानुसार वर्गों में बाँट देते हैं और सरल कार्य कम योग्यता वालों को तथा कठिन कार्य अधिक योग्यता वालों को देते हैं।

- वाद-विवाद द्वारा प्रश्नों को स्पष्ट करने के अवसर देकर
- गृहकार्य में कठिन समस्यायें देकर

- पदोन्नति (Double promotion) / वर्ष में दो बार उन्नति
  - इस मत को मानने वालों के अनुसार प्रतिभावान बालक सीखने की क्रिया में अधिक तेजी से विकास करते हैं, इसलिये इन्हें एक वर्ष में दो बार उन्नति देनी चाहिये। इससे बालकों को अधिक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी तथा उनकी योग्यताओं का उचित विकास होगा।
  - इसके विपरीत दूसरे मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि ऐसा करने से बच्चों के सीखने की क्रिया के क्रमिक विकास से वंचित रखेंगी, क्योंकि यह आवश्यक नहीं है कि उनकी सभी विषयों में विशेष योग्यता हो।
- विशेष एवं विस्तृत पाठ्यक्रम - प्रतिभावान बालकों हेतु अधिक विषयवस्तु एवं कठिन विषयवस्तु का समावेश कर निर्माण किया जाये जिससे उनकी मौलिक योग्यता, तर्क चिन्तन, सामान्य मानसिक योग्यता तथा रचनात्मक शक्तियों का विकास किया जा सके।
- व्यक्तिगत शिक्षण - नियमित परामर्श एवं निर्देशन कार्यक्रमों का आयोजन
- विशेष विद्यालय / कक्षाएँ - अलग से विशेष विद्यालयों की व्यवस्था जहाँ पाठ्यक्रम और दूसरी सहगामी क्रियायें, उनकी प्रतिभाओं को ध्यान में रखकर बनाया जाये।
  - कुछ विद्वानों का मत है कि ऐसा करने से प्रतिभावान बालकों में प्रभुत्व की भावना होने के कारण, समायोजन दोष उत्पन्न होने का भय रहता है। NEP 1986 के तहत नवोदय विद्यालय स्थापित
- नेतृत्व एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास।
- विशेष अवकाशकालीन कक्षाओं की व्यवस्था।
- सृजनात्मकता को प्रेरित करने वाले वातावरण की उपलब्धता।
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन तथा आयोजनों की जिम्मेदारी।
- विद्यालय पत्रिका में एवं सम्पादन कार्यों में प्रतिभा का उपयोग।

14:22
4G
Ajay Shripal
Damodar Ahirwal
Vishnu pandey, arti pandey
Narendra Sharma

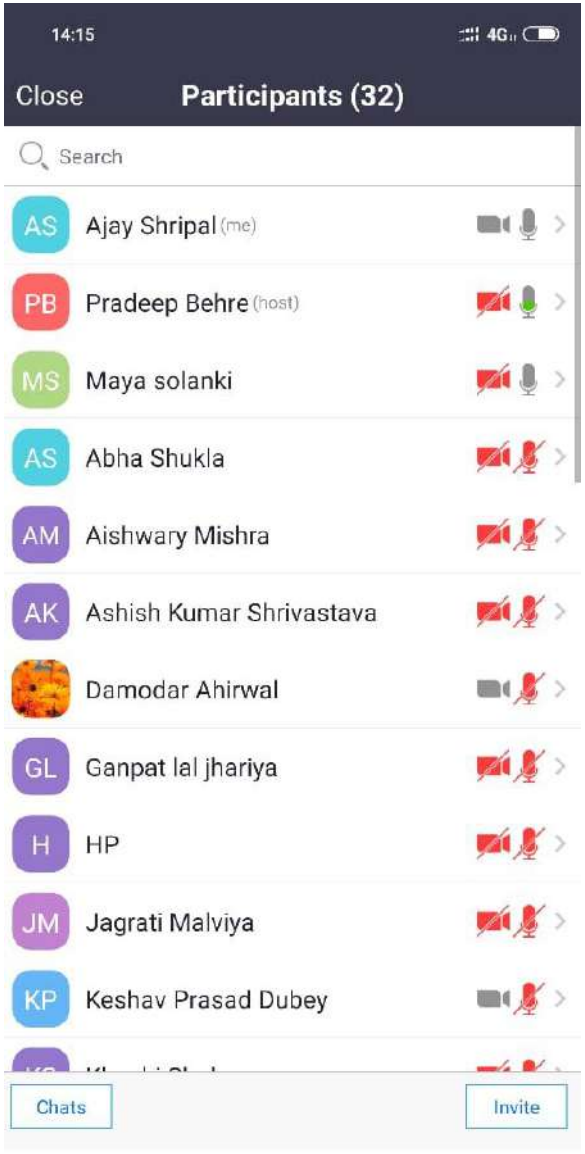
14:15
4G
Close
Participants (32)
Search
AS Ajay Shripal (me)
PB Pradeep Behre (host)
MS Maya solanki
AS Abha Shukla
AM Aishwary Mishra
AK Ashish Kumar Shrivastava
Damodar Ahirwal
GL Ganpat lal jhariya
H HP
JM Jagrati Malviya
KP Keshav Prasad Dubey
Chats
Invite

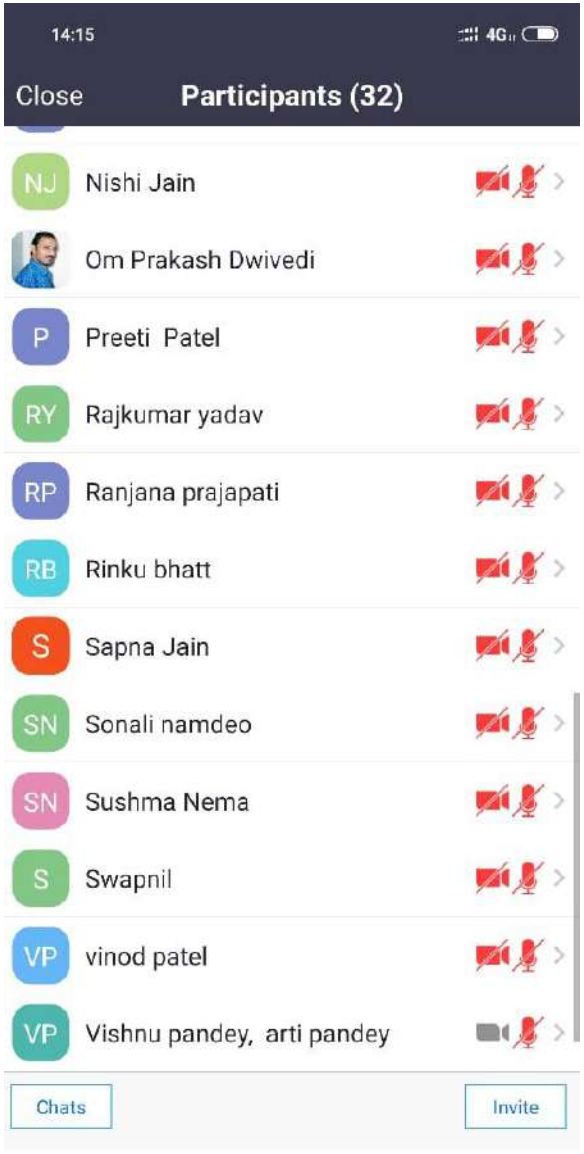
14:15
4G
Close
Participants (32)
NJ Nishi Jain
Om Prakash Dwivedi
P Preeti Patel
RY Rajkumar yadav
RP Ranjana prajapati
RB Rinku bhatt
S Sapna Jain
SN Sonali namdeo
SN Sushma Nema
S Swapnil
VP vinod patel
VP Vishnu pandey, arti pandey
Chats
Invite